मत डराइये जर्जर पाकिस्तान से...?

- भूपेंद्र गुप्ता अगम

हिंदुस्तान और पाकिस्तान को आज़ाद हुए सात दशकों से ज्यादा समय हो गया है। हिंदुस्तान अपनी आज़ादी का जश्न मना रहा है और पाकिस्तान अपने अस्तित्व को बचाने की कोशिश कर रहा है। आज भारत हर क्षेत्र में बहुत आगे निकल गया है और पाकिस्तान हर दिन विनाश की स्थिति में धंसता चला जा रहा है। पाकिस्तान की न तो दुनिया मे कोई इज्जत बची है और न ही अपने ही देश के अच्छे नागरिकों में कोई इज्जत है। भारत से बेबुनियाद दुश्मनी निभाते हुए खुद बर्बाद हो गया है और अपनी कई पीढ़ियों का भविष्य बर्बाद कर दिया है। पाकिस्तान की नई पीढ़ी पर तरस आता है। यहां के तंग नजरिये वाले तानाशाही सैनिक शासकों ने नई प्रतिभाशाली पीढ़ी को कुछ नही दिया है।

पाकिस्तानी चेनल्स पर एक बुजुर्ग महिला इंटरव्यू में रिपोर्टर से कह रही थी कि कहाँ है वो इमरान। उससे पूछो कि पेट कैसे भरेगा? महिला ने कहा - ''बड़ा कहता था, नवाज चोर है, नवाज चोर है - मगर वो मुल्क का पेट तो भर रहा था।'' वह चिल्ला-चिल्लाकर यह भी कह रही थी कि पिछला शासन ठीक था। वह रिपोर्टर को बताती है कि उसका बेटा सॉफ्टवेयर इन्जीनियर है, अच्छी पगार थी - मगर कंपनी के पास पगार देने के पैसे ही नहीं हैं। छह महीने से पगार नहीं है और मंहगाई आसमान छू चुकी है। वह बताती है कि 200 रूपये किलो टमाटर बिक रहा है। भीड़ मेंऔर कई लोग हैं सबके चेहरे पर उदासी है भविष्य की चिंता है।

एक और वीडियो देखता हूँ - उसमें चेनल का एंकर कह रहा है, कि ''भाई कोई मुल्क हमारे साथ नहीं है। मुस्लिम देशों ने हाथ खड़े कर दिए हैं। यूएन कह रहा है आप अपनी खुद सम्हालें और संयम रखें। अमरीका गोल-गोल बातें कर रहा है, तब हमारे हुक्मरान क्यों यूफोरिया फैला रहे हैं। मतलब ये कि पकिस्तान का आवाम हकीकत से रूबरू हो रहा है।

कई सवाल...!

अब सवाल यह है कि जो देश अंदर से टूट चुका है और अपने पैरों पर खड़े होने की ताकत गंवा चुका है, उसे खलनायक बनाकर भारत के जांबाज़ नागरिकों को डराने का काम क्यों किया जा रहा है? जब चुनाव था तो इसी मरियल से पाकिस्तान भारत के लोगों में डर फैलाया गया। इस हद तक कि कांग्रेस की जीत से पाकिस्तान में फटाखे फूटेंगे। भय की इसी दुनिया से हमारे फैसले भी गलत दिशा में चले जाते हैं। हम अपने अंदरूनी हालातों से भटक जाते हैं और एक कमजोर तथा जर्जर दुश्मन को हौव्वा मानकर देश के लिए जरुरी फैसलों से समझौता कर लेते हैं।

सवाल यह नहीं कि पाकिस्तान बदतर स्थिति में क्यों है। सवाल यह कि आर्थिक और सैन्य शक्ति से सम्पन्न भारत के लोग पाकिस्तान का नाम लेकर क्यों डर जाते हैं? जिस पाकिस्तान को हमारी सेनाएं कई बार धूल चटा चुकी हैं उससे हम क्यों डरें? भारत के नागरिकों को डरपोक और कमज़ोर कौन समझता है? पाकिस्तान का हमसे कोई मुकाबला नही है। हम बहुत आगे निकल आये हैं।

लड़खड़ाता देश

अमरीकी डॉलर की तुलना में पाकिस्तानी रुपया लगातार कमज़ोर होकर 160 रूपये तक गिर चुका है। जो हालात है उससे नहीं लगता कि अब पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था में सुधार हो सकता है। पाकिस्तान का विदेशी मुद्रा भंडार भी घटकर सबसे निचले स्तर पर लगभग 17 बिलियन डालर पर पहुँच गया है। पाक अर्थशास्त्री इन बेकाबू हालातों के कई कारण गिना रहे है। पाकिस्तान के इतिहास में इतनी छोटी अवधि में इतनी बड़ी गिरावट पहली बार हुई है। आईएमएफ़ से छह अरब डॉलर के क़र्ज़ के समझौते को देखते हुए पाकिस्तानी रुपए में और गिरावट की आशंका जताई जा रही है।

कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि भुगतान के लिए डॉलर की मांग बढ़ रही है और पर्याप्त डॉलर नहीं हैं। डॉलर ख़रीदेंगे तो रुपए में और गिरावट आना तय है। इमरान ख़ान सरकार में आने से पहले रुपए में गिरावट को लेकर बहुत बोलते थे लेकिन अब लाचार हैं। आर्थिक संकट को देखते हुए उन्हें अपने नागरिको से कहना पड़ा है कि वे अपनी संपत्ति की घोषणा कर दें ताकि वैध और बेनामी संपत्ति का फ़र्क़ पता चल सके। उन्हें कहना पड़ा कि पिछले 10 साल में पाकिस्तान का क़र्ज़ छह हज़ार अरब से 30 हज़ार अरब रुपए तक पहुंच गया है। चार हज़ार अरब रुपए का सालाना टैक्स इकट्ठा होता है। आधी के लगभग आय क़र्ज़ों की किस्तें अदा करने में जाती हैं। बाक़ी का पैसा जो बचता है उससे मुल्क का खर्च नहीं चल सकता।

इमरान ख़ान अपने चुनावी भाषण में कहते थे कि वो प्रधानमंत्री बनने के बाद ख़ुदकुशी करना पसंद करेंगे लेकिन क़र्ज़ नहीं लेंगे। अब क़र्ज़ के अलावा कोई विकल्प नहीं है। एक बात साफ है कि चुनावों में जनता से झूठ बोलने का चलन वहां भी जारी है।

पकिस्तान की सबसे बड़ी चिंता इस वक्त अफगानिस्तान से लौटने वाली उसकी सेना है जिसकी पगार का इंतजाम उसे करना पड़ेगा। इसी काम के लिए उसे अमरीकी इमदाद की जरुरत है और इसलिए वह अमरीका से मदद के लिए गिड़गिड़ा रहा है।

क्यों डरे हम?

क्या ऐसे लड़खड़ाते पाकिस्तान से भारत को डर लगना चाहिए? क्या ऐसा टूटता पाकिस्तान हमें डरा सकता है? क्या अनिश्चित भविष्य वाला पाकिस्तान हमारे सुनहरे भविष्य में बाधा डाल सकता है? क्या भारत के नागरिक इतने कमज़ोर है कि इसका जवाब नहीं दे पायेंगे? हमें यह याद रखना चाहिए कि भारत भी आज मंदी की चपेट में आ रहा है गलत फैसले हमें भी उसी गर्त में धकेल सकते हैं। हमें अपने देश के फैसले लेने में अपनी परिस्थितियां देखनी होंगीं पाकिस्तान तो अपनी मौत खुद ही मर रहा है। **(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)**

नोट: मनुज फीचर में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।